International Journal Of Multidisciplinary Research In Science, Engineering and Technology (IJMRSET)

| ISSN: 2582-7219 | www.ijmrset.com | Monthly Peer Reviewed Journal |

| Volume 4, Issue 10, October 2021 |

देश-भक्ति, साहित्य और संगीत

Dr. Shruti Goswami

Dept. of Music (Vocal), Maharani Sudarshan Govt. Girls College, Bikaner, Rajasthan, India

सार

कवि प्रदीप (जन्म : 6 फरवरी, 1915, उज्जैन, मध्य प्रदेश; मृत्यु : 11 दिसंबर, 1998, मुंबई, महाराष्ट्र) का मूल नाम रामचंद्र नारायणजी द्विवेदी था। प्रदीप हिंदी साहित्य जगत् और हिंदी फिल्म जगत् के एक अति सुदृढ़ रचनाकार रहे। कवि प्रदीप 'ऐ मेरे वतन के लोगो' सरीखे देशभक्ति गीतों के लिए जाने जाते हैं। उन्होंने 1962 के भारत-चीन युद्ध के दौरान शहीद हुए सैनिकों की श्रद्धांजलि में यह गीत लिखा था। भारत रत्न से सम्मानित स्वर कोकिला लता मंगेशकर द्वारा गाए इस गीत का तत्कालीन प्रधानमंत्री जवाहरलाल नेहरू की उपस्थिति में 26 जनवरी 1963 को दिल्ली के रामलीला मैदान से सीधा प्रसारण किया गया था। यूं तो कवि प्रदीप ने प्रेम के हर रूप और हर रस को शब्दों में उतारा, लेकिन वीर रस और देश भक्ति के उनके गीतों की बात ही कुछ अनोखी थी। उनके पिता का नाम नारायण भट्ट था। प्रदीप जी उदीच्य ब्राह्मण थे।

परिचय

कवि प्रदीप की शुरुआती शिक्षा इंदौर के शिवाजी राव हाई स्कूल में हुई, जहां वह सातवीं कक्षा तक पढ़े। इसके बाद की शिक्षा इलाहाबाद के दारागंज हाई स्कूल में हुई। इसके बाद इंटर मीडिएट की परीक्षा उत्तीर्ण की। दारागंज उन दिनों साहित्य का गढ़ हुआ करता था। वर्ष 1933 से 1935 तक का इलाहाबाद का काल प्रदीप जी के लिए साहित्यिक दृष्टिकोण से बहुत अच्छा रहा।[1] उन्होंने लखनऊ विश्वविद्यालय से स्नातक की शिक्षा प्राप्त की और अध्यापक प्रशिक्षण पाठ्यक्रम में प्रवेश लिया। विद्यार्थी जीवन में ही हिंदी काव्य लेखन एवं हिंदी काव्य वाचन में उनकी गहरी रुचि थी। कवि प्रदीप गांधीवादी विचारधारा के कवि थे। प्रदीप जी ने जीवन मूल्यों की कीमत पर धन-दौलत को कभी महत्त्व नहीं दिया। कठोर संघर्षों के बावजूद उनके निवास स्थान 'पंचामृत' पर स्वर्ण के कंगुरे भले ही न मिलें, परंतु वैश्विक ख्याति का कलश जरूर दिखेगा। प्रदीप जी भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन में बढ़-चढ़ कर हिस्सा लेते थे[2]। एक बार स्वतंत्रता के आंदोलन में उनका पैर फ्रैक्चर हो गया था और कई दिनों तक अस्पताल में रहना पड़ा। वह अंग्रेजों के अनाचार-अत्याचार आदि से बहुत दुखी होते थे। उनका मानना था कि यदि आपस में हम लोगों में ईर्ष्या-द्वेष न होता तो हम गुलाम न होते। परम देशभक्त चंद्रशेखर आजाद की शहादत पर कवि प्रदीप का मन करुणा से भर गया था। वर्ष 1940 में भारतीय स्वतंत्रता संग्राम अपने चरम पर था।[3] देश को स्वतंत्र कराने के लिए छिड़ी मुहिम में कवि प्रदीप भी शामिल हो गए और इसके लिए उन्होंने अपनी कविताओं का सहारा लिया। अपनी कविताओं के माध्यम से प्रदीप देशवासियों में जागृति पैदा किया करते थे। 1940 में ज्ञान मुखर्जी के निर्देशन में उन्होंने फिल्म 'बंधन' के लिए भी गीत लिखा। यूं तो फिल्म बंधन में उनके रचित सभी गीत लोकप्रिय हुए, लेकिन 'चल चल रे नौजवान…' के बोल वाले गीत ने आजादी के दीवानों में एक नया जोश भरने का काम किया। वर्ष 1954 में ही फिल्म 'जागृति' में उनके रचित गीत की कामयाबी के बाद वह शोहरत की बुलंदियों पर जा बैठे। यह फिल्म कवि प्रदीप के गानों के लिए आज भी स्मरणीय है। प्रदीप द्वारा रचित गीत 'हम लाए हैं तूफान से कश्ती निकाल के, इस देश को रखना मेरे बच्चो संभाल के' और 'दे दी हमें आजादी बिना खड़ग बिना ढाल, साबरमती के संत तूने कर दिया कमाल' जैसे गीत आज भी लोगों के बीच काफी लोकप्रिय हैं। मिस कमल बी.ए. के नकली नाम से लिखते-लिखते और फिल्मीस्तान की राजनीति से प्रदीप ऊब चुके थे। अतः उन्होंने फिल्मीस्तान से अलग होकर, अपने सहयोगियों की मदद से 'लोकमान्य प्रोडक्शंस' नामक फिल्म निर्माण संस्था बनाई। 1949 में पहली फिल्म आई 'गर्ल्स स्कूल' , जिसमें प्रदीप के नौ गाने थे। सी. रामचंद्र और अनिल विश्वास जैसे संगीतकारों का निर्देशन, लता मंगेशकर और शमशाद बेगम का गायन भी कोई करिश्मा नहीं कर पाया। कवि प्रदीप समझ गए कि फिल्म कंपनी चलाना उनके बस की बात नहीं है, क्योंकि इससे उनकी मुख्य धारा कुंठित हो रही थी। अतः वह लोकमान्य प्रोडक्शंस से अलग हो गए और फिर स्वतंत्र रूप से लिखने लगे। बॉम्बे टॉकीज ने इस अवसर का लाभ उठाया और अपनी फिल्म 'मशाल' (1950)[4] के लिए उनसे सात गीत लिखवाए। इस परिवर्तन का कारण यह था कि बॉम्बे टॉकीज का काम सावक वाचा के साथ अशोक कुमार देख रहे थे, जो प्रदीप से पहले से ही काफी प्रभावित थे। कवि प्रदीप को अनेक सम्मान प्राप्त हुए थे, जिनमें संगीत नाटक अकादमी पुरस्कार (1961) तथा फिल्म जर्नलिस्ट अवार्ड (1963) शामिल हैं। यद्यपि साहित्यिक जगत् में प्रदीप की रचनाओं का मूल्यांकन पिछड़ गया, तथापि फिल्मों में उनके योगदान के लिए भारत सरकार, राज्य सरकारें, फिल्मोद्योग तथा अन्य संस्थाएं उन्हें सम्मानों और पुरस्कारों से अंलकृत करते रहे। उन्हें सर्वश्रेष्ठ फिल्मी गीतकार का पुरस्कार राष्ट्रपति राजेंद्र प्रसाद द्वारा दिया गया।[5] 1995 में राष्ट्रपति द्वारा 'राष्ट्रकवि' की उपाधि दी गई और सबसे अंत में, जब कवि प्रदीप का अंत निकट था, फिल्म जगत् में उल्लेखनीय योगदान के लिए 1998 में भारत के राष्ट्रपति के.आर. नारायणन द्वारा प्रतिष्ठित 'दादा साहब फाल्के पुरस्कार' दिया गया।

| ISSN: 2582-7219 | www.ijmrset.com | Monthly Peer Reviewed Journal |

| Volume 4, Issue 10, October 2021 |

विचार-विमर्श

देशभक्ति गीत ऐसे गीत हैं जिनमें राष्ट्रीयता की भावना का रस निहित हो। प्रायः देश पर विकट समस्या आने पर या राष्ट्रीय सुधारों के लिये इन गीतों का प्रयोग किया जाता है। इससे देशवासियों में राष्ट्रीयता की भावना जागृत होती है। राजनीति, खेल, अन्तर्राष्ट्रीय स्तर के कार्यक्रम और राष्ट्र पर आधारित चलचित्र इत्यादि में इन गीतों का प्रयोग आम बात है।[1]कई भारतीय कवियों ने देशभक्ति गीतों की रचना की है। सुमित्रानंदन पंत की जय जन भारत, कवि प्रदीप की ऐ मेरे वतन के लोगों, तथा गिरिजाकुमार माथुर की हम होंगे कामयाब उपकार[6] (मेरे देश की धरती सोना उगले उगले हिरा मोती) इत्यादि प्रचलित हैं। बंकिमचंद्र चट्टोपाध्याय का गीत वंदे मातरम्, क्रान्तिकारी पण्डित राम प्रसाद 'बिस्मिल' की गज़ल सरफरोशी की तमन्ना एवं शायर इक़बाल का तराना सारे जहाँ से अच्छा जैसे अनेक गीत भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन में काफी प्रचलित व लोकप्रिय हुए।ब्रिटिश राज के दौरान प्रतिबन्धित छोटी-छोटी पुस्तिकाओं में प्रकाशित इन देशभक्ति गीतों ने ही पूरे हिन्दुस्तान की आम जनता को एक क्रान्तिकारी बदलाव के लिये आन्दोलित किया।[2] भारतीय क्रिकेट पर विशेष लिखे गये गीत प्रचलित हैं, जैसे शंकर महादेवन की सुनों गौर से दुनिवालों, ए आर रहमान की दे घुमा के इत्यादि। कई बॉलीवुड व अन्य भारतीय चलचित्रों में देशभक्ति गीत गाये गये हैं। भारत-पाकिस्तान और भारत-चीन के बीच हो रहे युद्ध के समय राष्ट्रीयता पर आधारित कई चलचित्र आये जिनके गीत बहुत लोकप्रिय और प्रचलित हुए। सरफ़रोशी की तमन्ना अब हमारे दिल में है एवं मेरे देश की धरती (फिल्म: उपकार), संदेसे आते हैं (फिल्म: बॉर्डर), "मेरा रँग दे बसन्ती चोला!" (फिल्म शहीद), दरो-दीवार पे हसरत से नज़र करते हैं (फिल्म: आन्दोलन)[3] तथा "जहाँ डाल-डाल पर सोने की चिड़ियाँ करती हैं बसेरा" (फिल्म: सिकन्दर-ए-आज़म) इत्यादि अनेकों उदाहरण हैं। भारत के बाहर भारत से सम्बन्धित कार्यक्रमों में इनका प्रयोग सहज रूप से होता है। संगीत, नृत्य, कला व भारतीय पर्व के उपलक्ष में आयोजित कार्यक्रमों में इन्हें अक्सर बजाया जाता है।[7]

भारतीय स्वतन्त्रता आन्दोलन राष्ट्रीय एवम् क्षेत्रीय आह्वानों, उत्तेजनाओं एवम् प्रयत्नों से प्रेरित, भारतीय राजनैतिक संगठनों द्वारा संचालित अहिंसावादी आन्दोलन था, जिनका एक समान उद्देश्य,अंग्रेजी शासन से भारतीय उपमहाद्वीप को मुक्त करना था। इस आन्दोलन का आरम्भ १८५७ के सिपाही विद्रोह से माना जा सकता है। जिसमें स्वाधीनता के लिए हजारों लोगों की जान गई। भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस ने १९२९ के लाहौर अधिवेशन में अंग्रेजों से पूर्ण स्वराज की माँग की। 3 जून 1947 को, वाइसकाउंट लुइस माउंटबैटन, जो आख़िरी ब्रिटिश गवर्नर-जनरल ऑफ़ इण्डिया थे, ने ब्रिटिश भारत का भारत और पाकिस्तान में विभाजन घोषित किया। ब्रिटिश संसद के भारतीय स्वतंत्रता अधिनियम १९४७ के त्वरित पारित होने के साथ, 14 अगस्त 1947 को 11:57 बजे, [8]पाकिस्तान एक भिन्न राष्ट्र घोषित हुआ, और मध्यरात्रि के तुरन्त बाद 15 अगस्त 1947 को 12:02 बजे भारत भी एक सम्प्रभु और लोकतान्त्रिक राष्ट्र बन गया। भारत पर ब्रिटिश शासन के अन्त के कारण, अन्ततः 15 अगस्त 1947 भारत का स्वतन्त्रता दिवस बन गया। उस 15 अगस्त को, दोनों पाकिस्तान और भारत को ब्रिटिश कॉमनवेल्थ में रहने या उससे निकलने का अधिकार था। 1949 में, भारत ने कॉमनवेल्थ में रहने का निर्णय लिया।[9]

आज़ादी के बाद, हिन्दुओं, सिखों और मुसलमानों के बीच हिंसक मुठभेड़े हुई। प्रधान मंत्री नेहरू और उप प्रधान मंत्री सरदार वल्लभभाई पटेल ने माउंटबैटन को गवर्नर-जनरल ऑफ़ इण्डिया क़ायम रहने का न्योता दिया। जून 1948 में, चक्रवर्ती राजगोपालाचारी ने उन्हें प्रतिस्थापित किया।[10]

पटेल ने, "मख़मली दस्ताने में लोह मुट्ठी" की अपनी नीतियों से, 565 रियासतों को भारतीय संघ में एकीकृत करने का उत्तरदायित्व लिया, व उन नीतियों का अनुकरणीय प्रयोग, जूनागढ़ और हैदराबाद राज्य को भारत में एकीकृत करने हेतु सैन्य बल के उपयोग (ऑपरेशन पोलो) में देखने को मिला। दूसरी ओर, पण्डित नेहरू जी ने कश्मीर का मुद्दा अपने हाथों में रखा।[11]

संविधान सभा ने संविधान के प्रारूपीकरण का कार्य 26 नवम्बर 1949 को पूरा किया; 26 जनवरी 1950 को भारत गणतन्त्र आधिकारिक रूप से उद्घोषित हुआ। संविधान सभा ने, गवर्नर-जनरल राजगोपालाचारी से कार्यभार लेकर, डॉ० राजेन्द्र प्रसाद को भारत का प्रथम राष्ट्रपति निर्वाचित किया।[12] तत्पश्चात्, फ़्रान्स ने 1951 में चन्दननगर और 1954 में पॉण्डिचेरी तथा अपने बाकी भारतीय उपनिवेश, सुपुर्द कर दिएँ। भारत ने 1961 में गोवा और पुर्तगाल के इतर भारतीय एन्क्लेवों पर जनता के व्दारा अनदोलन करने के बाद गोवा पर अधिकार कर लिया। 1975 में, सिक्किम ने भारतीय संघ में सम्मिलित होने का निर्वाचन किया।

1947 में स्वराज का अनुसरण करके, भारत कॉमनवेल्थ ऑफ़ नेशन्स में बना रहा, और भारत-संयुक्त राजशाही सम्बन्ध मैत्रीपूर्ण रहे हैं। पारस्परिक लाभ हेतु दोनों देश कई क्षेत्रों में मज़बूत सम्बन्धों को तलाशते हैं, और दोनों राष्ट्रों के बीच शक्तिशाली सांस्कृतिक और सामाजिक सम्बन्ध भी हैं। यूके में 16 लाख से अधिक संजातीय भारतीय लोगों की जनसंख्या हैं। 2010 में, तत्कालीन प्रधान मंत्री डेविड कैमरून ने भारत-ब्रिटिश सम्बन्धों को एक "नया ख़ास रिश्ता" बताया।[1] रबीन्द्रनाथ ठाकुर (बांग्ला: *রবীন্দ্রনাথ ঠাকুর*) (७ मई, १८६१ – ७ अगस्त, १९४१) विश्वविख्यात कवि, साहित्यकार, दार्शनिक और भारतीय साहित्य के नोबल पुरस्कार विजेता हैं। उन्हें गुरुदेव के नाम से भी जाना जाता है। बांग्ला साहित्य के माध्यम से भारतीय सांस्कृतिक चेतना में नयी जान फूँकने वाले युगदृष्टा वे ही थे। वे एशिया के प्रथम नोबेल पुरस्कार सम्मानित व्यक्ति हैं। वे एकमात्र कवि हैं जिसकी दो रचनाएँ दो देशों का राष्ट्रगान बनीं - भारत का राष्ट्र-गान 'जन गण मन' और बाँग्लादेश का राष्ट्रीय गान 'आमार सोनार बांङ्ला' गुरुदेव की ही रचनाएँ हैं।[2] टैगोर ने

| ISSN: 2582-7219 | www.ijmrset.com | Monthly Peer Reviewed Journal |

| Volume 4, Issue 10, October 2021 |

लगभग 2,230 गीतों की रचना की। रवींद्र संगीत बाँग्ला संस्कृति का अभिन्न अंग है। टैगोर के संगीत को उनके साहित्य से अलग नहीं किया जा सकता। उनकी अधिकतर रचनाएँ तो अब उनके गीतों में शामिल हो चुकी हैं। हिंदुस्तानी शास्त्रीय संगीत की ध्रुवपद शैली से प्रभावित ये गीत मानवीय भावनाओं के अलग-अलग रंग प्रस्तुत करते हैं।[13]

अलग-अलग रागों में गुरुदेव के गीत यह आभास कराते हैं मानो उनकी रचना उस राग विशेष के लिए ही की गई थी। प्रकृति के प्रति गहरा लगाव रखने वाला यह प्रकृति प्रेमी ऐसा एकमात्र व्यक्ति है जिसने दो देशों के लिए राष्ट्रगान लिखा।[14]

परिणाम

भारतीय साहित्य से तात्पर्य सन् 1947 के पहले तक भारतीय उपमहाद्वीप एवं तत्पश्चात् भारत गणराज्य में निर्मित वाचिक और लिखित साहित्य से है। विश्व का सबसे पुराना वाचिक साहित्य आदिवासी भाषाओं में मिलता है। इस दृष्टि से आदिवासी साहित्य सभी साहित्य का मूल स्रोत है।[15]

भारतीय गणराज्य में 22 आधिकारिक मान्यता प्राप्त भाषाएँ है। वर्तमान समय में भारत में मुख्यतः दो साहित्यिक पुरस्कार प्रदान किए जाते हैं, साहित्य अकादमी पुरस्कार तथा ज्ञानपीठ पुरस्कार। हिन्दी तथा कन्नड भाषाओं को आठ-आठ ज्ञानपीठ पुरस्कार प्रदान किए गये हैं। बांग्ला और मलयालम को पाँच-पाँच, उड़िया को चार; गुजराती, मराठी, तेलुगु और उर्दू को तीन-तीन, तथा असमिया, तमिल को दो-दो और संस्कृत को एक ज्ञानपीठ पुरस्कार दिया गया है।[1][2] भारतवर्ष अनेक भाषाओं का विशाल देश है - उत्तर-पश्चिम में पंजाबी, हिन्दी और उर्दू; पूर्व में उड़िया, बंगाल में असमिया; मध्य-पश्चिम में मराठी और गुजराती और दक्षिण में तमिल, तेलुगु, कन्नड और मलयालम। इनके अतिरिक्त कतिपय और भी भाषाएं हैं जिनका साहित्यिक एवं भाषावैज्ञानिक महत्त्व कम नहीं है- जैसे कश्मीरी, डोगरी, सिंधी, कोंकणी, तुलू आदि। इनमें से प्रत्येक का, विशेषतः पहली बारह भाषाओं में से प्रत्येक का, [12]अपना साहित्य है जो प्राचीनता, वैविध्य, गुण और परिमाण- सभी की दृष्टि से अत्यंत समृद्ध है। यदि आधुनिक भारतीय भाषाओं के ही सम्पूर्ण वाङ्मय का संचयन किया जाये तो वह यूरोप के संकलित वाङ्मय से किसी भी दृष्टि से कम नहीं होगा। वैदिक संस्कृत, संस्कृत, पालि, प्राकृतों और अपभ्रंशों का समावेश कर लेने पर तो उसका अनन्त विस्तार कल्पना की सीमा को पार कर जाता है- ज्ञान का अपार भंडार, हिंद महासागर से भी गहरा, भारत के भौगोलिक विस्तार से भी व्यापक, हिमालय के शिखरों से भी ऊँचा और ब्रह्म की कल्पना से भी अधिक सूक्ष्म। भारत की प्रत्येक भाषा के साहित्य का अपना स्वतन्त्र और प्रखर वैशिष्ट्य है जो अपने प्रदेश के व्यक्तित्व से मुद्रांकित है। पंजाबी और सिंधी, इधर हिन्दी और उर्दू की प्रदेश-सीमाएं कितनी मिली हुई हैं, किंतु उनके अपने-अपने साहित्य का वैशिष्ट्य कितना प्रखर है। [10]इसी प्रकार गुजराती और मराठी का जन-जीवन परस्पर ओतप्रोत है, किन्तु क्या उनके बीच में किसी प्रकार की भ्रांति संभव है? दक्षिण की भाषाओं का उद्गम एक है : सभी द्रविड़ परिवार की विभूतियां हैं, परन्तु क्या कन्नड़ और मलयालम या तमिल और तेलुगु के स्वारूप्य के विषय में शंका हो सकती है? यही बात बांग्ला, असमिया और उड़िया के विषय में सत्य है। बंगाल के गहरे प्रभाव को पचाकर असमिया और उड़िया अपने स्वतंत्र अस्तित्व को बनाये हुए हैं।[11]

इन सभी साहित्यों में अपनी-अपनी विशिष्ट विभूतियां हैं। तमिल का संगम-साहित्य, तेलगु के द्वि-अर्थी काव्य और उदाहरण तथा अवधान-साहित्य, मलयालम के संदेश-काव्य एवं कीर-गीत (किलिप्पाट्टु) तथा मणिप्रवालम् शैली, मराठी के वोवाडे, गुजराती के आख्यान और फागु, बँगला का मंगल काव्य, असमिया के बरगीत और बुरंजी साहित्य, पंजाबी के रम्याख्यान तथा वीरगति, उर्दू की गजल और हिन्दी का रीतिकाव्य तथा छायावाद आदि अपने-अपने भाषा–साहित्य के वैशिष्ट्य के उज्ज्वल प्रमाण हैं।

फिर भी कदाचित् यह पार्थक्य आत्मा का नहीं है। जिस प्रकार अनेक धर्मों, विचार-धाराओं और जीवन प्रणालियों के रहते हुए भी भारतीय संस्कृति की एकता असंदिग्ध है, इसी प्रकार इसी कारण से अनेक भाषाओं और अभिवयंजना-पद्धतियों के रहते हुए भी भारतीय साहित्य की मूलभूत एकता का अनुसंधान भी सहज-संभव है। भारतीय साहित्य का प्राचुर्य और वैविध्य तो अपूर्व है ही, उसकी यह मौलिकता एकता और भी रमणीय है। भारतीय संगीत प्राचीन काल से भारत मे सुना और विकसित होता संगीत है। इस संगीत का प्रारंभ वैदिक काल से भी पूर्व का है। इस संगीत का मूल स्रोत वेदों को माना जाता है। हिंदु परंपरा मे ऐसा मानना है कि ब्रह्मा ने नारद मुनि को संगीत वरदान में दिया था।[11]

पंडित शारंगदेव कृत "संगीत रत्नाकर" ग्रंथ मे भारतीय संगीत की परिभाषा "गीतम, वादयम् तथा नृत्यं त्रयम संगीतमुच्यते" कहा गया है। गायन, वाद्य वादन एवम् नृत्य; तीनों कलाओं का समावेश संगीत शब्द में माना गया है। तीनो स्वतंत्र कला होते हुए भी एक दूसरे की पूरक है। भारतीय संगीत की दो प्रकार प्रचलित है; प्रथम कर्नाटक संगीत, जो दक्षिण भारतीय राज्यों में प्रचलित है और हिन्दुस्तानी संगीत शेष भारत में लोकप्रिय है। भारतवर्ष की सारी सभ्यताओं में संगीत का बड़ा महत्व रहा है। धार्मिक एवं सामाजिक परंपराओं में संगीत का प्रचलन प्राचीन काल से रहा है। इस रूप में, संगीत भारतीय संस्कृति की आत्मा मानी जाती है। वैदिक काल में अध्यात्मिक संगीत को मार्गी तथा लोक संगीत को 'देशी' कहा जाता था। कालांतर में यही शास्त्रीय और लोक संगीत के रूप में दिखता है।[3]

वैदिक काल में सामवेद के मंत्रों का उच्चारण उस समय के वैदिक सप्तक या सामगान के अनुसार सातों स्वरों के प्रयोग के साथ किया जाता था। गुरू-शिष्य परंपरा के अनुसार, शिष्य को गुरू से वेदों का ज्ञान मौखिक ही प्राप्त होता था व उन में किसी प्रकार के

| ISSN: 2582-7219 | www.ijmrset.com | Monthly Peer Reviewed Journal |

| Volume 4, Issue 10, October 2021 |

परिवर्तन की संभावना से मनाही थी। इस तरह प्राचीन समय में वेदों व संगीत का कोई लिखित रूप न होने के कारण उनका मूल स्वरूप लुप्त होता गया। ऐ मेरे वतन के लोगो एक हिन्दी देशभक्ति गीत है जिसे कवि प्रदीप ने लिखा था और जिसे सी॰ रामचंद्र ने संगीत दिया था। ये गीत १९६२ के चीनी आक्रमण के शहीद हुए भारतीय सैनिकों को समर्पित था। यह गीत तब मशहूर हुआ जब लता मंगेशकर ने इसे नई दिल्ली में गणतंत्र दिवस के अवसर पर रामलीला मैदान में तत्कालीन प्रधानमंत्री पं॰ जवाहरलाल नेहरू की उपस्थिति में गाया।। चीन से हुए युद्ध के बाद 27 जनवरी 1963 में डेल्ही नेशनल स्टेडियम में स्वर कोकिला लता मंगेशकर ने दिया था। यह कहा जाता है इस गाने को सुनने के बाद नेहरु जी की आँखें भर आई थीं।[1][2] इंसाफ़ की डगर पे (नाय की राह पर) शकील बदायूँनी द्वारा रचित भारतीय गीत है। यह स्वतंत्र भारत में नये आशावाद को प्रस्तुत करने वाला देशभक्ति गीत है।[1] यह बच्चों को सम्बोधित करते हुये उन्हें भारतीय नागरीक के रूप में दायित्वों को बताता है।[2][3] यह बॉलीवुड फ़िल्म गंगा जमुना (१९६१) का फ़िल्म संगीत है। इसको हेमन्त कुमार ने गाया है।[4]

इन्साफ़ की डगर पे, बच्चों दिखाओ चल के
ये देश है तुम्हारा, नेता तुम्हीं हो कल के
दुनिया के रंज सहना और कुछ न मुँह से कहना
सच्चाइयों के बल पे आगे को बढ़ते रहना
रख दोगे एक दिन तुम संसार को बदल के
इन्साफ़ की। ..

अपने हों या पराए सबके लिये हो न्याय
देखो कदम तुम्हारा हरगिज़ न डगमगाए
रस्ते बड़े कठिन हैं चलना सम्भल-सम्भल के
इन्साफ़ की। ..

इन्सानियत के सर पर इज़्ज़त का ताज रखना
तन मन भी भेंट देकर भारत की लाज रखना
जीवन नया मिलेगा अंतिम चिता में जल के,
इन्साफ़ की। ..

क़दम क़दम बढ़ाए जा सुभाष चन्द्र बोस द्वारा संगठित आज़ाद हिन्द फ़ौज का तेज़ क़दम ताल गीत था। इसके बोल लखीमपुर खीरी के अवधी कवि और स्वतंत्रता सेनानी वंशीधर शुक्ल ने लिखे थे।[1][2] आगे चलकर यह भारत में एक बहुत लोकप्रीय देशभक्ति का गीत बन गया।[13]

क़दम क़दम बढ़ाये जा
ख़ुशी के गीत गाये जा
ये ज़िंदगी है क़ौम की
तू क़ौम पे लुटाये जा

तू शेर-ए-हिन्द आगे बढ़
मरने से तू कभी न डर
उड़ा के दुश्मनों का सर
जोश-ए-वतन बढ़ाये जा

क़दम क़दम बढ़ाये जा
ख़ुशी के गीत गाये जा
ये ज़िंदगी है क़ौम की
तू क़ौम पे लुटाये जा

हिम्मत तेरी बढ़ती रहे
ख़ुदा तेरी सुनता रहे
जो सामने तेरे खड़े
तू ख़ाक़ में मिलाये जा

क़दम क़दम बढ़ाये जा
ख़ुशी के गीत गाये जा

| ISSN: 2582-7219 | www.ijmrset.com | Monthly Peer Reviewed Journal |

| Volume 4, Issue 10, October 2021 |

ये ज़िंदगी है क़ौम की
तू क़ौम पे लुटाये जा

चलो दिल्ली पुकार के
क़ौमी-निशाँ संभाल के
लाल क़िले पे गाड़ के
लहराये जा लहराये जा

क़दम क़दम बढ़ाये जा
ख़ुशी के गीत गाये जा
ये ज़िंदगी है क़ौम की
तू क़ौम पे लुटाये जा

निष्कर्ष

भारत का स्वतंत्रता दिवस (अंग्रेज़ी: Independence Day of India, हिंदी:इंडिपेंडेंस डे ऑफ़ इंडिया,संस्कृतम्:"स्वातन्त्र्यदिनोत्सवः") हर वर्ष १५ अगस्त को मनाया जाता है। सन् 1947 में इसी दिन भारत के निवासियों ने ब्रिटिश शासन से स्वतंत्रता प्राप्त की थी। यह भारत का राष्ट्रीय त्यौहार है।[14]

प्रतिवर्ष इस दिन भारत के प्रधानमंत्री लाल किले की प्राचीर से देश को सम्बोधित करते हैं। १५ अगस्त १९४७ के दिन भारत के प्रथम प्रधानमंत्री जवाहर लाल नेहरू ने, दिल्ली में लाल किले के लाहौरी गेट के ऊपर, भारतीय राष्ट्रीय ध्वज फहराया था।[1] महात्मा गाँधी के नेतृत्व में भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में लोगों ने काफी हद तक अहिंसक प्रतिरोध और सविनय अवज्ञा आंदोलनों में हिस्सा लिया। स्वतंत्रता के बाद ब्रिटिश भारत को धार्मिक आधार पर विभाजित किया गया, जिसमें भारत और पाकिस्तान का उदय हुआ। विभाजन के बाद दोनों देशों में हिंसक दंगे भड़क गए और सांप्रदायिक हिंसा की अनेक घटनाएं हुईं। विभाजन के कारण मनुष्य जाति के इतिहास में इतनी ज्यादा संख्या में लोगों का विस्थापन कभी नहीं हुआ। यह संख्या तकरीबन 1.45 करोड़ थी। भारत की जनगणना 1951 के अनुसार विभाजन के एकदम बाद 72,26,000 मुसलमान भारत छोड़कर पाकिस्तान गये और 72,49,000 हिन्दू और सिख पाकिस्तान छोड़कर भारत आए। [2]

इस दिन को झंडा फहराने के समारोह, परेड और सांस्कृतिक आयोजनों के साथ पूरे भारत में मनाया जाता है। भारतीय इस दिन अपनी पोशाक, सामान, घरों और वाहनों पर राष्ट्रीय ध्वज प्रदर्शित कर इस उत्सव को मनाते हैं और परिवार व दोस्तों के साथ देशभक्ति फिल्में देखते हैं, देशभक्ति के गीत सुनते हैं।[15]

संदर्भ

1. अनुभूति: मेरा भारत (संकलन) Archived 2013-06-14 at the Wayback Machine अभिगमन तिथि: २४ मार्च २०१४
2. ↑ बिस्मिल जयन्ती: ११ जून (यू ट्यूब पर) Archived 2014-06-13 at the Wayback Machine अभिगमन की तिथि: २४ मार्च २०१४]
3. ↑ "दरो-दीवार पे हसरत से नज़र करते हैं" (यू ट्यूब पर) Archived 2014-05-17 at the Wayback Machine अभिगमन तिथि: २४ मार्च २०१४
4. Nelson, Dean (7 July 2010). "Ministers to build a new 'special relationship' with India". The Daily Telegraph. मूल से 7 फ़रवरी 2011 को पुरालेखित. अभिगमन तिथि 20 नवंबर 2016.
5. [https://web.archive.org/web/20070529142823/http://www.jnanpith.net/ Archived 2007-05-29 at the Wayback Machine भारतीय ज्ञानपीठ का आधिकारिक जालस्थल
6. ↑ "कुंवर नारायण को ज्ञानपीठ पुरस्कार". Times of India. 24 November 2008. Archived from the original on 5 December 2012. Retrieved 25 November 2008।
7. पवन झा (15 अगस्त 2013). "आज़ादी के मशहूर तराने". बीबीसी हिन्दी. अभिगमन तिथि 15 अगस्त 2013.[
8. ↑ "'Ai mere vatan ke logon '" ['ऐ मेरे वतन के लोगों' ५० वर्ष का।] (अंग्रेज़ी में). द टाइम्स ऑफ़ इण्डिया. 25 जनवरी 2013. अभिगमन तिथि 15 अगस्त 2013.[
9. क्रमांकित सूची आइटम सुश्री लता मंगेशकर के गाये गीत के अनुसार शब्दशः सुधार दिनांक 5 जनवरी 2014, प्राइम टाइम इन्फोमीडिया प्राइवेट लिमिटेड़, मुंबई

| ISSN: 2582-7219 | www.ijmrset.com | Monthly Peer Reviewed Journal |

| Volume 4, Issue 10, October 2021 |

10. "India@64: Top 10 Patriotic songs of Bollywood". एमएसएन. 9 अगस्त 2011. मूल से 15 जून 2012 को पुरालेखित. अभिगमन तिथि 13 अगस्त 2017.
11. ↑ सुभाष कुमार झा (26 जनवरी 2015). "Bollywood in a patriotic mood" [देशभक्ति रंग में बॉलीवुड] (अंग्रेज़ी में). डेक्कन क्रोनाइकल. मूल से 17 मई 2017 को पुरालेखित. अभिगमन तिथि 13 अगस्त 2017.
12. ↑ भारद्वाज रंगन (5 सितम्बर 2015). "Songs in the texting-tweeting era" (अंग्रेज़ी में). द हिन्दू. अभिगमन तिथि 13 अगस्त 2017.
13. ↑ "Independence Day songs" [स्वतंत्रता दिवश संगीत] (अंग्रेज़ी में). इंडिया टुडे. 11 अगस्त 2011. मूल से 17 अप्रैल 2017 को पुरालेखित. अभिगमन तिथि 13 अगस्त 2017.
14. Reflections And Reminiscences Of Police Officers Archived 2014-06-28 at the Wayback Machine, Sankar Sen, pp. 90, Concept Publishing Company, 2006, ISBN 978-81-8069-236-9, ... Captain Ram Singh, associate of Netaji Subhash Chandra Bose, and the legendary INA bandmaster credited with the famous kadam kadam badayeja, khushi ke geet gayeja ...
15. ↑ Netaji Subhas Chandra Bose and Indian war of independence Archived 2014-06-28 at the Wayback Machine, Satish Chandra Maikap, pp. 352, Punascha, 1998, ISBN 8173321551, ... I. N. A. Marching Song Qadam qadam bar'haye ja ...